International Journal of Social Science and Humanities
www.humanitiesjournals.com
Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X
Received: 18-05-2025, Accepted: 17-06-2025, Published: 02-07-2025
Volume 7, Issue 4, 2025, Page No. 1-2

पश्चिमी राजस्थान में रामस्नेही संप्रदाय एक विवेचन:– ऐतिहासिक संदर्भ में

मोहन लाल
सहायक आचार्य एवं शोधार्थी, इतिहास विभाग, (विद्या संबल योजना) राजकीय महाविद्यालय बायतु, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
विगत कुछ दशकों से विश्व के इतिहास लेखन को लेकर नवीन विधाओं का प्रचलन प्रारंभ हुआ है। जिनमें क्षेत्रीय इतिहास व संप्रदाय का स्वतंत्र लेखन महत्वपूर्ण है भारत के इतिहास के दृष्टिकोण से या विभिन्न संप्रदायों का इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। परंतु विभिन्न क्षेत्रों तक पहले संप्रदायों की विवेचना करना अभी शेष है इसी अनुक्रम में," पश्चिमी राजस्थान में रामस्नेही संप्रदाय एक विवेचन ऐतिहासिक संदर्भ में"और रामसनेही संप्रदाय ने इस क्षेत्र में अपनी अनूठी पहचान स्थापित की है। यह आलेख रामस्नेही संप्रदाय की विविध पक्षों से संबंध सूचनाओं पर विशेष प्रकाश डालता है ताकि रामस्नेही संप्रदाय को सार्थक तरीके से समझ व जान सके।

मूल शब्दः रामस्नेही ,संप्रदाय,पीठ आध्यात्मिक, साक्षात्कार, शिष्य, गृहत्याग

- रामस्नेही संप्रदाय का भारतीय इतिहास में विशेष स्थान है। इस संप्रदाय के सभी संतो ने निर्गुण भक्ति करते हुए अनेक समाज सुधार के कार्य किए।
- रामसनेही वंशावली में अनंतश्रीरामानंद जी महाराज हुए, उनके शिष्य अनंतानंद जी महाराज हुए, इनके शिष्य कृष्णदास पयहारी व कर्मचंद जी हुए। इनकी छठी पीढ़ी के शिष्य संतदास जी हुए, संत दास जी के दो शिष्य प्रेमदास व कृपाराम जी हुए। प्रेम दास जी के शिष्य दरियाव जी ने रैण में रामस्नेही पीठ की स्थापना की। और दूसरे शिष्य कृपाराम जी के शिष्य रामचरण जी महाराज ने शाहपुरा भीलवाड़ा में रामस्नेही पीठ की स्थापना की । अनंतानंद जी महाराज के शिष्य परंपरा के दसवें शिष्य हरिराम दास जी महाराज ने खेड़ापा जोधपुर में रामस्नेही पीठ की स्थापना की।
- राजस्थान में 18वीं शताब्दी के अंतिम चरण में रामस्नेही संप्रदाय का उद्गम माना जाता है। रामस्नेही संप्रदाय की राजस्थान में चार पीठे रैण, शाहपुरा, सिहथल, खेड़ापा है। इन चारों पीठों में वाणी साहित्य एवं संप्रदायगत साहित्य लिखा गया है।
- दरियावजी का जन्म विक्रम संवत 1733 ई की कृष्ण जन्माष्टमी के दिन हुआ था। मदाराम जी जो दरियाव जी के पौत्र शिष्य थे उन्होंने दरियाव जी की जन्म लीला ग्रंथ में लिखा।
- शाहपुरा रामस्नेही पीठ के प्रवर्तक स्वामी रामचरण जी महाराज का जन्म राजस्थान के टोंक जिले के गांव सोडा में विक्रम संवत 1776 को माघ शुक्ल चौदस को हुआ। रामचरण जी के बचपन का नाम रामाकिशन था। रामचरण जी का विवाह गुलाब कंवर के साथ हुआ था और विवाह के बाद रामचरण जी ने पटवारी की नौकरी की। उनको कुछ समय के लिए जयपुर आमेर के राजा जयसिंह द्वितीय ने उन्हें मालपुरा शाखा जयपुर के दीवान का पद दिया। 1743 इसी में अपने पिता की मृत्यु के बाद रामचरण जी की भौतिक जीवन से रुचि खत्म होने लगी भविष्यवाणी करने वाले भृगी संत को पता चला कि उन्हें एक दिन सपना आया कि किसी संत ने उन्हें नदी में डूबने से बचाया। उसके एक दिन बाद रामचरण जी को परिवार छोड़ने की अनुमति मिल गई। जब गृह त्याग किया तब घर में उनकी पत्नी वह एक बेटी थी।
- विक्रम संवत 1808 में भगवान को जानने और एक पूर्ण आध्यात्मिक गुरु को खोजने की लालसा हुई। सबसे पहले रामचरण जी ने दक्षिण की ओर यात्रा शुरू की और लोगों को सपने में दिखाई देने वाले संतो को पूछते हुए यह बताते हुए की संत कैसे दिखते होंगे अंत में उन्हें राजस्थान में भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा के पास दांतडा गांव में संत कृपाराम जी महाराज मिले। वे कृपाराम जी महाराज के शिष्य बन गए। और उनका अनुसरण करने लगे। 9 वर्ष तक तपस्या संत कृपाराम जी महाराज की आज्ञा में की। उन 9 वर्षों के दौरान रामचरण जी ने कई चमत्कार किए जो आज भी स्थानीय लोगों और रामस्नेही संप्रदाय के बीच है। यह अपनी अनूठी निर्गुण भक्ति परंपरा के लिए भी लोकप्रिय हुए। उन्होंने कई स्थानों का दौरा किया अपने अनुभव बताएं और लोगों को हिंदू धर्म में दिखावा, अंधविश्वास ,पाखंड और भ्रामक शिक्षाओं को खत्म करने की सलाह दी।
- रामचरण जी ने परम तक पहुंचने के मार्ग के रूप में राम–राम कहने की वकालत की। उन्होंने ईश्वर को पाने के साधन के रूप में भक्ति को बढ़ावा दिया सगुण और निर्गुण प्रकारों के बीच संघर्ष को खत्म करने की कोशिश की । वाणी जी उनके द्वारा रचित कार्यों का संग्रह ज्ञान भक्ति और वैराग्य पर केंद्रित है। आध्यात्मिक गुरु को स्वामी जी ने अपने जीवन में सर्वोच्च दर्जा दिया है जैसा कि उनके श्लोकों में कहा गया है अक्सर गुरु की तुलना राम से की जाती है। छात्र साधक को विशाल ग्रथो को पढ़ने से बचने और इसके बजाय आत्म साक्षात्कार के सबसे सरल साधन के रूप में राम–राम का जाप करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए कहा। सर्वोच्च अस्तित्व हर जगह हर जीवित प्राणी में मौजूद है। स्वामी जी ने विशिष्टतावाद विचारधारा का पालन किया। कीड़ों मकोड़ा सहित किसी भी जीवित प्राणी के प्रति अहिंसा का केंद्रीय सिद्धांत दिया।
- पश्चिमी राजस्थान में स्वामी मुरली राम जी महाराज विसरते विचरते बालोतरा पधारे। बालोतरा में रामद्वारा की स्थापना की उसके बाद समदड़ी में रामद्वारा की स्थापना की उसके उपरांत बाड़मेर में टेलियों का वास राम चौक में रामद्वारा की स्थापना की बालोतरा समदड़ी में नैनूराम जी के शिष्य हुए उनमें से एक गगनराज महाराज ने बालोतरा दूसरे शिष्य रामनिवास जी महाराज बाड़मेर रहे। एक अन्य शिष्य किशन दास जी महाराज जो समदड़ी में रहे गगन राम महाराज के

शिष्य डॉ रामस्वरूप शास्त्री जी हुए उनके शिष्य संत सुखराम जी वर्तमान में प्रमुख संत है। अग्रवालों का मोहल्ला गोपाल दास जी का रामद्वारा– यह रामद्वारा के प्रमुख संत यह रामद्वारा संतो दास गुदड़ परंपरा का है। जो रामस्नेही संप्रदाय की प्रमुख पिठो में से एक पीठ संतोदास से संचालित है। उनके शिष्य राघुदास जी महाराज हुए। उनके शिष्य बालक राम जी महाराज हुए, उनके शिष्य गोपाल दास जी महाराज हुए उनके शिष्य श्री राम रतन जी महाराज हुए जो वर्तमान में इस राम द्वारा का संचालन करते हैं।

- बसरा रामद्वारा युक्ति राम जी महाराज का जन्म स्थान है। उनके शिष्य सुंदर दास जी जो राम चौकी विराई भोपालगढ़ जोधपुर में रहते हैं। समदड़ी राम द्वारा शाहपुरा पीठ से संबंधित है जसोल, पटाली नाडी रतेऊ, निबाणियों की ढाणी ,माडपुरा बरवाला ,काश्मीर रैण पीठ से संबंधित हैं। बालोतरा रामद्वारा शाहपुरा पीठ से संबंधित है। केकड़, सेड़वा, बुड़ीवाड़ा यह रामद्वारे खेड़ापा पीठ से संबंधित है।

संदर्भ सूची

1. राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर
2. राजस्थान राज्य अभिलेखागार शाखा जोधपुर
3. राजस्थान प्राचीन विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर
4. महाराज मानसिंह पुस्तक प्रकाश मेहरानगढ़ जोधपुर (महकमा खास की फाइल्स)
5. राजस्थान शोध संस्थान चौपासनी जोधपुर
6. रामसनेही पीठ के प्रवर्तक आचार्य दरियाव जी महाराज की प्राचीन दुर्लभ वाणी दर्शन विक्रम संवत 1858
7. मूल रिकॉर्ड रामस्नेही संप्रदाय रामद्वारा डॉ अमृत राम जी महाराज विद्यासाला चांदपोल जोधपुर
8. अणभेवाणी मुरली राम जी महाराज
9. साक्षात्कार नैनूराम जी का रामद्वारा संत सुखराम जी
10. पंचरत्न स्त्रोत संत गगन राम रामस्वरूप बाड़मेर रामस्नेही युवा संत परिषद
11. मेरे तो गिरधर गोपाल बृजेंद्र कुमार सिंघल भारतीय विद्या मंदिर बीकानेर 2008
12. रामस्नेही धर्म दर्पण संत मनोहर दास भवानी मंडी राजस्थान संवत 2004
13. राजस्थानी साहित्य क की रूपरेखा डॉ मोतीलाल मेनारिया 1952
14. स्वामी श्री राम चरण जी अनुभव वाणी सानुवाद प्रथम भाग संपादक मंडल संत अमृत राम पुष्कर 2015